आज बार बार हमें दादी की याद आई कितनी।
बाबा याद आए जितना याद आई दादी उतनी।
इतने प्यार से ब्राह्मण परिवार को था सम्भाला।
हम सब आत्माओं में भरा था ज्ञान का उजाला।
दादी से प्यार की दृष्टि पाकर धन्य हुए थे हम।
उनके संग की याद से ही भूल चुके सारे गम।
हुई जिन्दगी खुशहाल पाकर दादी से पालना।
अब ठाना हमने खुद को श्रीमत पर है ढालना।
खुश होती थी दादी पवित्र कुमारों को देखकर।
बनेंगे सम्पूर्ण पावन बाबा का कहना मानकर।
आज बाबा संग दादी की याद आई अनायास।
किया आज दादी के लिए वाणी का उपवास।
जो आस लगाई दादी ने हम करेंगे जरूर पूरी।
भूलकर मतभेद हम मिटायेंगे एक दूजे से दुरी।
प्यार बांटेंगे एक दूजे से लिए हौसले है बुलंद।
देखेंगे आत्मा को देह को देखना किया है बंद।

ॐ शांति